युवा मिलन - डेटिगं

मैने बहुत से लोगो को कहते हुये पाया है डेटिगं भारतिये परम्परा नही है । पर ध्यान देने पर यह कथन असत्य सिध्द हो जायेगा कि यहबहुत हि प्रचीन भारतिये परम्परा थी पर पिछली दस शताब्दियो मे यह भारत से लुप्त हो गई, यबनो और मुगलो के भारत पर अधिपत्य के कारण । इसके लिये हम कुछ ही उदारण यहाँ पर लिखेगें जैसे नल- दमयन्ती, पृथ्वीराज- सयोंगिता, सत्यबान- सवित्री और ऐसे बहुत से उदाहरण हमारे इतिहास मे भरे पडे है ।

अब अईये यह बिचार किया जाय कि क्या युवा मिलन गलत है और क्या हम इस प्रकृतिक जरुरत को रोक सकते है ? या इस पर रोक लगा सकते है ? यह एक प्रकृति का नियम है कि युवक युवतिया मे एक दूसरे के प्रति आर्कषण स्वाभाविक ही होता है । फिर इसमे गलत क्या है ? हमारी अपनी कुन्ठायें, भ्रम, व अपनी मान्यताओ को नही जानना या अपनी इच्छाओ को अपने युवा बर्ग तक नही पहुँचाना, आदी चीजे भी युवा मिलन को नही रोक सकती है । पर हम इन्हे सही दिशा तो दे सकते है । सही दिशा यह है कि हम अपने युवक युवतियो को बता दे क्या क्या बाते हम सहन कर सकते है क्या नही और कुछ सीमाये ऐसी है जिन्हे लाघंना विवाह से पहले समाज के हित मे नही है । जैसे हम अपने बच्चो को खुश रखने की कोशिश करते वैसे बच्चे भी अपने बडो को खुश रखने की कोशिश करते है । हमारे बच्चे वही करते है जैसी हम उनसे ऊम्मीदें रखते है । हमे अपनी कुंठाओ को अपने तक ही रखना होगा । हमे अपनी भारतीय स्थिति,भारतीय परम्पराओं का अबलोकन करना होगा कि क्या हम उन सबसे हमेशा के लिये जुडे रहेगें जबकि हमारे देश,काल, पात्र की स्थिति मे अन्तर आ गया है ।

हमे युवक व युवतियो को एक दूसरे के पास आने देना होगा ताकि वे स्वतंत्रतापूर्वक अपने जीवन साथी का चयन कर सकें । पर इसके लिये भी हमे एक दो बाते जो मेरे मन को कचोट रहीं है जो अपने युवा वर्ग को बतानी होगी । एक अपनी जाति व धर्म के संदर्भ मे क्या सही है और क्या गलत है, हमारे मानदन्ड के अन्दर , जो हर परिवार के लिये अलग अलग हो सकता है । दूसरा हमे उनके निर्णय को स्वीकारना होगा, यदि हमने उन्हे निर्णय लेना बचपन मे सिखा दिया है । क्योकि हम उनके लिये हम जीवन भर हर निर्णय नही ले सकते है । इसका अर्थ यह नही है हम उनके लिये गये निर्णयो पर टीका टिप्पणी नही करेगे, या वह कोई गलती नही करेगें । पर इसका एक और दृष्टिकोण है इस तरह उन्हे अपने निर्णयो केफलो को स्वीकारना आयेगा । एक बात यहाँ पर स्पष्ट हो गई कि हम अपने बच्चो का जीवन कभी भी जी नही सकते हैं । ना तो हम उनके जीवन के सारे निर्णय ले ही सकते है ना ही हमारे लिये हुये निर्णय ही हमशा सही होगें । सोचिये क्या हमने अपने जीवन मे गलतिया नही की है । तो उन गलतियो की तरफ उनका ध्यान तो आकर्षित कर सकते पर उनसे वह लाभ उठाये या नही यह उनके उपर है । अधिकांश अपनी ही गलतियो से सीखेगे । बहुत से युवक व युवतियो से हमने बाते की है इस विश्य पर निर्कष यही है कि हमे जीवन को जीने के यि अपनी गलतियो को करने दो हम भी निंदोष नही है ।

रश्मि उमेश रोहतगी

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA Phone : (248) 471-5786

Web Page : www.rurohatgi.com Email : rurohatgi@yahoo.com